'रवीन्द्र कालिया' की कहानियों में चित्रित उच्च वर्गीय समाज

शोधार्थी

विनोद बाबुराव मेघशाम[1]

शोध निदेशक

डॉ. शक्तिकुमार द्विवेदी[2]

Article Link: https://aksharasurya.com/2023/10/vinod-baburao-meghsham-shaktikumar-dwivedi/

शोध सारांश: अपने समय के समाज को रवीन्द्र कालिया ने बडी ही गहराई के साथ अपने कथा साहित्य में चित्रित किया है। युग विशेष की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थिति में समाज के उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग किस तरह एक दुसरे के प्रति व्यवहार कर रहा था उसका भी चित्रण किया है। समय परिवर्तनशील है। युगीन परिस्थितियाँ हमेशा एक सी नहीं रहती। युग बदलने के साथ-साथ किसी समाज विशेष की परिस्थितियाँ भी बदल जाती है। इसलिए जिस रचनाकार के पास संवेदनाओं को गहराई से समझने और उसे विश्लेषित करने की समझ नहीं होगी, उसका साहित्य कभी भी कालजयी नहीं हो सकता। रवीन्द्र कालिया अपने कहानियों में उच्च वर्गीय समाज के लोगों कि जीवन शैली के साथ ही उनका ऐश्वर्यपूर्ण जीवन उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आस्तित्व का परिचय कराते है। उच्च वर्ग किस तरह समाज के अन्य लोगों के साथ दुराव रखता है, उसके साथ समाज में प्रतिष्ठा रखने के लिए किस तरह संघर्ष करता है। और गरीबों के प्रति सहानुभूति दिखाकर अपने सुविधानुसार स्वार्थ के लिए उनका उपयोग करने की प्रवृति को दिखाया गया है, आदि का अपने कहानियों में चित्रित किया है।

बीज शब्द :

रवीन्द्र कालिया, उच्च वर्गीय, वैभव शाली जीवन, उच्च वर्गीय मानसिकता, सहानुभूति, प्रतिष्ठा।

1.शोधार्थी-उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद
2.प्राध्यापक-उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद

मूल आलेख : भारतीय सामाजिक व्यवस्था में समाज को उसके आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को लोग अलग-अलग वर्ग में देखते हैं। जैसे उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग। उच्च वर्गीय लोग वैभवशाली जीवन आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सम्पन्न होते हैं। मध्यम वर्ग के लोग आर्थिक एवं सामाजिक रूप में संपन्न होने के लिए संघर्ष करते रहते है। निम्न वर्ग के लोग इन दोनों समाज के वर्ग से पीढित रहता है। रवीद्र कालिया एक प्रसिद्ध कहानीकार है। जिन्होंने अपने कहानियों में समाज के हर एक वर्ग के सामाजिक विषयों को बहुत ही मार्मिकता एवं यथार्थ के साथ चित्रित किया है। उन्होने अपने कहानियों में उच्च वर्गीय समाज के अनके सामाजिक संदर्भ अध्ययन करने पर ऐसा सामाजिक भेदभाव दृष्टिगोचर होता है। जैसे कि उच्च वर्गीय समाज की जीवन शैली, उनकी मानसिकता एवं उनका व्यवहारिक आचरण आदि।

वैभवशाली जीवन यापन करनेवाले घरों में खाना बनाने के लिए बावर्ची की व्यवस्था करना, और अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागृत एवं सामाजिक स्थानमान को भी ध्यान में रखते है। ऐसी घटनाएँ सामाजिक एवं पारिवारिक गौरव के साथ एक वैभवशाली जीवन का परिचय कराती है। यह लोग अपने पारिवारिक मान सम्मान पर भी यह बहुत ध्यान देते हुए दिखाई देते हैं। इसका एक उदाहरण रवीन्द्र कालिया अपनी कहानी 'बुढवा मंगल' में इस तरह से चित्रित करते है कि ''उसके बाप ने बिटिया के लिए एक बावर्ची की व्यवस्था भी कर रखी है, जिसका वेतन प्रदेश सरकार चुका रही है। अपनी जेठानियों पर रोब जमाने के लिए छोटी बहू ने एक अंग्रेजी स्कूल में छह सौ रुपये महीने पर बच्चों को पढाने का बीडा उठा लिया है।''[1] इस कथन से उच्च वर्गीय समाज के लोग अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा को कितना महत्व देते है। उसे इस संदर्भ के साथ समझ सकते हैं।

उच्च वर्गीय समाज की जीवन शैली एवं उनकी खान-पान की आदतों से वे हमें उनके वैभवशाली जीवन के संकेत देते है। समाज में व्यक्ति वर्ण व्यवस्था से ऊँचे स्थान पर होने पर भी चारित्रिक रूप से वह चरित्रहीन रहता है। वह अपने आसपास भी निम्न जाति के लोगो को भटकने नहीं देता, वह उन्हें निम्न से भी निम्न मानता है। इस प्रकार के व्यवहार से समाज में उसके प्रति गौरव नहीं रखा जा सकता। जिस प्रकार से सामाजिक व्यवस्था में वह समाज में गौरवान्वित है। मगर उनका चरित्र चरित्रहीन गुणों से भरा हुआ है, तो हर एक व्यक्ति उसके प्रति अगौरव, अभद्र भाषा का प्रयोग करता है। समाज में उसकी इज्जत न के बराबर रहती है। उच्च वर्गीय सामाजिक व्यवस्था में लोग उनके जीवन शैली से अपने व्यक्तित्व का परिचय देते हैं। साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति का भी परिचय कराते

है। उनकी जीवन शैली बहुत ही साफ-सुथरी और सुखी रहती है। इसी से उनके वैभवशाली जीवन का परिचय होता है। रवीन्द्र कालिया के द्वारा लिखी गई कहानी 'चाल' में कैसे उच्च समाज के लोग रूपयों की ताकत पर गरीब और दयनीय लोगों को अपने आसपास भी भटकने नहीं देते हैं इस कहानी के एक उदाहरण में देख सकते है, जैसे इस कहानी का पात्र कपूर साहब संत्री को पाँच रूपये देकर वहाँ के निम्न स्तरीय लोगों को कैसे डरा धमका कर उन्हे दूर रखने का प्रयास करते हैं। इसको इस संदर्भ में देख सकते हो। यह सत्य है कि पैसे से वैभवशाली हो सकता है परंतु अपने आचरण से नहीं। परंतु सामाजिक सत्य यह है कि पैसे के कारण व्यक्ति एक नहीं अनेक प्रकार के ऐसे कृत्य करता है, जो संत्री कपूर साहब से पाँच रूपये स्वीकारने के कारण वहाँ पर किसी भी सामान्य लोगों को उस पार्क के आसपास भी नहीं बल्कि 'चाल' के इर्द-गिर्द भी उन्हें आने नहीं देता है। यह उच्च वर्गीय व्यक्ति के उन संस्कारों को दिखाते हैं जो सामान्य लोगों को अपने पास आने नही देते वे लोग अपने को उनसे श्रेष्ठ समझते है। जिससे समाज में असमानता एवं सामाजिक भेदभाव का वातावरण निर्माण होता है। उसे 'चाल' कहानी के माध्यम से आप इस संदेश को देख सकते हैं। जैसे ''कपूर साहब ने अपनी बीवी और दोनों बेटियों को इस तरह के एक दृश्य का मजा लेते देख लिया की कपूर साहब गुस्से में पैर पटकने लगे और बीवी के रोकते-रोकते संतरी को पाँच रुपये थमा कर अपने साथ लेते आये। संतरी ने मजदूरों को देखते ही लाठी भांजते हुए गाली बकना शुरू कर दिया। दो-तीन दिन तक संतरी ने ऐसा समाँ बाँधा कि उन लोगों ने चाल तक आना छोड दिया। अब पार्क उनकी सीमा रेखा थी।''[2] मात्र मजदूर ही नहीं बल्कि गरीब व्यक्ति भी इन अमीरों के जीवन शैली का शिकार होता है। संपन्न परिवार वाले कपूर जैसे पूंजीपति लोग पैसे के बलबूते पर गरीबों के ऊपर लाठी प्रहार करते हैं। संम्पन्न लोगों के वैभवशाली जीवन का और एक संदर्भ जैसे यह लोग धन-संपत्ति, सोने, चांदी के आभूषण आदि इनके वैभवशाली जीवन का अंग बना हुआ रहते हैं। इसका उदाहरण 'चाल' कहानी में इस प्रकार से दर्शाया गया है कि ''उन दिनों वह माहिम में रहता था। रात देर को लौटता और अपनी पत्नी के आगोश में डबल बेड पर धंस जाता। फिर उसे सुबह ही होश आता था। अपने सुनहरे दिनों में पाल ने पत्नी को ढेरों कपडे दिये थे, और बहुत से जेवर। पाल की पत्नी मूर्ख नहीं थी। उसने ये सब चीजें कुछ ऐसे सँभाल कर रखीं कि आज भी जब वह चाल से निकलती है, तो किसी फिल्म निर्देशक की पत्नी से कम नहीं दिखती।''[3] उच्च वर्गीय समाज में लोगों के जीवन शैली से यह पता चलता है कि वह कितना सुखी और संपन्न जीवन जीते थे। चाहे उनका का घर हो या

अपने जीवन शैली में उपयोग किये जाने वाले आभूषण हो, यह सारा दृश्य हमें उच्च वर्गीय समाज के सम्पन्नता का परिचय देता है।

इनके द्वारा लिखी गई कहानी 'गरीबी हटाओ' एक बहु चर्चित कहानी है। इस कहानी का एक संदर्भ जिस के माध्यम से उच्च और निम्न वर्ग के संबंध का परिचय होता है। साथ ही उच्च वर्गीय व्यक्ति लोग कैसे निम्न वर्ग के व्यक्ति को अपनी सुविधानुसार उसका उपयोग कर लेता है और उसकी दरिद्रता के प्रति कैसे सहानुभूति दिखाने का प्रयत्न करता है। उसके इस सहानुभूति में उसका स्वार्थ भी होता है। गरीब व्यक्ति अपनी आर्थिक एवं दरिद्र परीस्थिति के कारण कितना मजबूर होता है। साथ ही उच्च वर्ग का चालक व्यवसायिक व्यक्ति कैसे उसका उपयोग कर लेता है। उस सारे बातों का वर्णन इन पंक्तियों में देखाई देता है, जैसे ''हरप्रसाद ने मोहन ठठेर के सामने बीडी का एक खुला पैकेट फेंक दिया। मोहन ठठेर की आखों में चमक आ गयी। हो सकता है, हरप्रसाद चाय का भी एक प्याला पिला दे।''[4] मनोहर ठठेर जैसा गरीब व्यक्ति जो ठीक से अपने पेट की भूख भी नहीं मिटा सकता उसको इस उदाहरण में देख सकते हैं। हरप्रसाद के दुकान के सामने बैठना उनके द्वारा दी गई बीडी पीना और मन में चाय पीने की अपेक्षा रखना यह एक दरिद्रता और गरीब का उदाहरण है, तो हरप्रसाद जैसे उच्च वर्गीय व्यक्ति का गरीब के प्रति सहानुभूति दिखाकर कैसे उसका उपयोग अपने दुकान की रखवाली के लिए कर लेते है। इस तरह अनेक संदर्भ उच्चवर्गीय लोगों के व्यवहार में देख सकते हैं।

'दादा दुबे' इस कहानी के द्वारा लेखक उच्च वर्ग के लोगों के सुखी जीवन की ओर संकेत करते हुए बताते हैं कि कैसे सम्पन्न धनवान व्यक्ति वैभवशाली जीवन जीते रहता है। साथ ही उनके जीवन शैली का अंग चाहे वह पहनने के वस्त्र, खान-पान की रुचि आदि को देख सकते है। इस संदर्भ में यह देख सकते हैं की उच्च वर्ग एक तो धनवान होने के कारण एक नही अनेक प्रकार की आदतों का शौकीन होते है। जिसका प्रतीक यहाँ पर देखने को मिलता है। जो उच्च समाज के लोगों के जीवन शैली का परिचय कराता है जैसे ''दादा बोले, मैं तो रम का गुलाम हूँ। तब तो हमारी खूब पटेगी। अलकाजी ने कहा, आप मेरे यहाँ आइएगा तो मैं आपको सौ साल पुरानी रम पिलाऊँगी। मेरे पास एक सौ तीन साल पुरानी रम है। आप विधायक हो जाएँगी तो पिलाऊँगा। दादा ने कहा।''[5] इस कथन से एक वैभवशाली जीवन एवं उनकी अय्याशी का परिचय भी होता है।

मनुष्य के जीवनशैली एवं व्यवहार से उसके सामाजिक स्थिति का पता चल सकता है। साथ ही उनके वैभवशाली जीवन के दर्शन भी होते है। जिससे हम उसकी सामाजिक स्थिति को बहुत ही सरल रूप से समझ सकते हैं। चाहे उनका रहन-सहन हो या उनका आचरण हो। शहर में रहनेवाले उच्चवर्ग के लोगों के जीवन एवं उनका व्यक्तित्व कैसे रहता है। उसका एक संदर्भ उनकी कहानी 'सन्दल और सिन्थाल' में चित्रित है। जैसे कि कहानी का नायक इंद्रजीत सामने वाले बिल्डिंग में खडी निर्वस्त्र स्त्री को देखते रहता है। वह स्त्री एक-एक कर अपने वस्त्र उतारती है। अपने शरीर की अंगों को देखकर उसकी नुमाईश करने लगती है। इस प्रकार जीवन शैली एक उच्च वर्गीय समाज के लोगों में ही दिखाई देती है क्योंकि जो स्त्री अपने बाथरूम में अपने शरीर के ऊपर के वस्त्र निकालकर जिस प्रकार से अपने को नग्न अवस्था में देखती है यह केवल सम्पन्न परिवार में ही होता है। और वही स्त्री रोज के जीवन में संपूर्ण वस्त्रों में रहती है। तो उसे देखने से ऐसा लगता है यह बहुत ही सभ्य संस्कार वाली स्त्री है। लेकिन उसके इस आदत से यह समझ सकते है कि कैसे संपन्न समाज के लोग अपनी अय्याशी एवं अपने जीवन का आनंद उठाते हैं। यह केवल मात्र आर्थिक रूप से संपन्न, जीवन में सुखी व्यक्ति ही इस प्रकार के आनंद ले सकता है। जो स्त्री यह सब करती हैं उसका एक संदर्भ 'सन्दल और सिन्थाल' कहानी में ऐसे चित्रित किया गया है जैसे कि ''वह एकटक बाथरूम में खडी नंगी औरत की तरफ देख रहा था। वह इस औरत को अच्छी तरह पहचानता है, जबकि उसने बाथरूम के अलावा उसे पूरी तरह कहीं नहीं देखा। दिन में जब वह कभी किसी कमरे में दिखायी देती है तो इन्द्रजीत आनन्द उसकी साडी में लिपटी टाँगे और पैर ही देख पाता है। उसने यह सब इतनी बार देखा है कि अब उसकी तमाम साडीयाँ पहचानता है। इससे अधिक परिचय शायद इन्दरजीत आनन्द चाहता भी नहीं।''[6] इससे केवल एक स्त्री के सौंदर्य की ही बात नहीं है बल्कि एक उच्च समाज में रहने वाले लोगों के जीवन शैली का एक अंग है। जो अपने सौंदर्य और अपने रूप के प्रति कितना लगाव रहता है। उच्च वर्गीय लोगों के जीवन शैली उनके संस्कार, सभ्यता, आचरण और उनका व्यवहार आदि से उनको समाज में एक अलग प्रकार का गौरव प्राप्त हुआ रहता है। वे लोग हर क्षेत्र में ऐश्वर्यापूर्ण एवं संपन्न जीवन जीने वाले होते हैं।

'टाट के किवाडों वाले घर' कहानी में उच्च वर्गीय समाज के व्यक्तियों की मानसिकता एवं वे कैसे अपने पद और स्थान मान से दुसरों का शोषण करते है, उसे इस कहानी में देख सकते है। सुविधा संपन्न जीवन जीने वाले लोग कैसे

गरीबों के साथ व्यवहार करते हैं। और आर्थिक रूप से संपन्न व्यक्ति कैसे निम्न वर्ग के साथ व्यवहार करता है। आदि को देख सकते हैं जैसे इस कहानी का पात्र पंडित नगर महापालिका में वाटर मैन का काम करता है। उच्च आधिकारी उससे अपने घर का काम करने के बाद वे उसे पैसे देने के बदले में पुराना कमीज देकर काम का मोबदला देते है। यह एक उच्च वर्गीय समाज के लोगों की मानसिकता का प्रतीक है, जो इस प्रकार से शोषण करते है। परंतु गरीब लोग उनके दिए हुए पुराने कपडों से भी प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार की मानसिकता उच्च वर्गीय समाज में दिखाई देती है। भारतीय समाज में ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। गांव से लेकर शहर तक उच्च समाज में रहने वाले लोग गरीब लोगों को अपने पुराने फटे कपडे देकर भी उनके काम का मुआवजा देते रहते हैं। इसलिए पंडितजी बहुत ही गर्व और प्रसन्नता के साथ दूसरों के सामने कहते है कि ''यह कमीज जो इस समय में पहना हूँ प्रशासक जी की है, खुश हो गये मेरे काम से और बोले, पंडितजी, भेंट तो नया कपडा करना चाहते थे, मगर अभी यही तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिए।''[7] इस घटना से यह देखने को मिलता है कि उच्च अधिकारी या उच्च व्यक्ति गरीबों के प्रति किस तरह व्यवहार करता है। यह घटना हमारे भारतीय समाज का यथार्थ चित्र सामने रखता है। ऐसी अनेक घटनाएं हमारे समाज में देखने को मिलती है।

अत: निष्कर्ष में यह कह सकते है कि इनके कहानियों में उच्च वर्गीय समाज के अलग अलग स्वभाव को देख सकते हैं। जैसे ऐश्वर्यपूर्ण जीवन शैली का परिचय घर में नौकर रखना, अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा के लिए बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा देना। अपने घर के बाथ रूम में अपने शरीर को अलग रूप से देखने का स्वभाव हो, गरीब, भूखे व्यक्ति को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करना, अपने रूतबे से उसके काम का ठिक दाम न देना। ऐसे अनेक उच्च वर्गीय लोगों के सामाजिक संदर्भ का चित्रण इनके कहानियों में देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि:

1. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ, 'बुढवा मंगल', रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन दिल्ली-2008 पृ.सं-375
2. मेरी प्रिय कहानियाँ, रवीन्द्र कालिया, 'चाल' कहानी राजपाल प्रकाशन, नयी दिल्ली-2017 पृ.सं-105
3. मेरी प्रिय कहानियाँ, 'चाल' कहानी रवीन्द्र कालिया, राजपाल प्रकाशन, नयी दिल्ली-2017 पृ.सं-107
4. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ, 'गरीबी हटाओ', रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन दिल्ली-2008 पृ.सं-266
5. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ, 'दादा दुबे', रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन दिल्ली-2008 पृ.सं-350
6. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ, 'सन्दल और सिन्थाल', रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन दिल्ली-2008 पृ.सं-79
7. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ, 'टाट के किवाडों वाले घर', रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन दिल्ली-2008 पृ.सं-310